(MIJ) 2020, Vol. No. 6, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

# ENVIRONMENTAL SCIENCE IN SANSKRIT LITERATURE

**Dr Sita Rathore**
*Associate Professor, Department of Sanskrit, MMH College, Ghaziabad*

# *संस्कृत साहित्य में पर्यावरण–विज्ञान*

**डॉ. सीता राठौर**
एसो. प्रो., संस्कृत विभाग, एम.एम.एच. कॉलेज, गाजियाबाद

---

*संसार की समस्त प्राचीनतम भाषाओं में संस्कृत का सर्वोच्च स्थान है। संस्कृत भाषा से ही कई भारतीय भाषाओं की उत्पत्ति हुई है। दूसरे शब्दों में इसे भारतीय भाषाओं की मां माना गया है। देश–विदेश के कई बड़े विद्वान् संस्कृत के अनुपम और विपुल साहित्य को देखकर चकित रह गए हैं। कई विशेषज्ञों ने वैज्ञानिक रीति से इसका अध्ययन किया और गहरी गवेषणा की है। समस्त भारतीय भाषाओं को जोड़ने वाली कड़ी यदि कोई भाषा है तो वह संस्कृत ही है। विश्व–साहित्य की प्रथम पुस्तक ऋग्वेद संस्कृत में ही रची गई है। संपूर्ण भारतीय–संस्कृति, परंपरा और महत्वपूर्ण राज इसमें निहित है। अमरभाषा या देववाणी, संस्कृत को जाने बिना भारतीय संस्कृति की महत्ता को जाना नहीं जा सकता। भारत के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन एवं विकास के सोपानों की संपूर्ण व्याख्या संस्कृत वाङ्मय में उपलब्ध है। संस्कृत–सभ्यता एवं संस्कृति की गौरव गाथा का बखान करती हैं। संस्कृति के मामले में हम दुनिया के सिरमौर रहे हैं। इसका मूल वैदिक साहित्य में प्राप्त होता है। वातावरण पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से प्रभावित होकर आज सारा विश्व प्रदूषण को दूर करने तथा पर्यावरण स्वच्छता के वैज्ञानिक उपाय खोज रहे हैं। इस समस्या की ओर जन–जन का ध्यान आकृर्षित करने के लिए प्रत्येक वर्ष 5 जून विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर संयुक्त राष्ट्र संघ तथा उससे जुड़ी संस्थाओं द्वारा प्रत्येक वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण की गोष्ठियाँ आयोजित की जाती है, जिनमें विश्व के पर्यावरण की बिगड़ती स्थिति और प्राणियों के अस्तित्व पर बड़ा खतरा बन चुकी है। इस समस्या पर चिन्ता व्यक्त की जाती है तथा इसके समाधान की दिशा में प्रतिभागी राष्ट्रों के प्रतिनिधियों द्वारा अपने सुझाव दिये जाते हैं और रणनीति तय की जाती है। वैज्ञानिक ने पर्यावरण की शुद्धि के लिए प्रकृति को मानव की सर्वाधिक सहयोगिनी मानते हुए विशेष रूप से वन एवं वृक्षों के महत्व को स्वीकार किया है। विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ वेद में मन्त्रद्रष्टा ऋषियों ने हजारों वर्ष पूर्व उपर्युक्त तथ्य का दर्शन कर लिया था। वैदिक संहिताओं में पर्यावरण की शुद्धि के लिए वन, वृक्ष एवं वनस्पतियों को उपयोगी मानते हुए उनके महत्व का निरूपण किया गया है। इसके अतिरिक्त वेदी में यज्ञ को पर्यावरण शुद्धि के लिए सर्वाधिक प्रभावशाली व सर्वोत्तम साधन के रूप में स्वीकार किया गया है। इसलिए वैदिक संस्कृति में प्रत्येक शुभ अवसर पर यज्ञ को अनिवार्य दैनिक कर्तव्य माना गया है। आज के इस प्राकृतिक प्रदूषण युग में वातावरण को प्रतिक्षण परिशुद्ध और पवित्र करने एवं उसे*

*जीवनदायक बनाने तथा सुखद वर्षा के अनुकूल करने के लिए यज्ञ के द्वारा आकाशीय वातावरण शुद्धकर आकाश वर्षा द्वारा पृथ्वी को तृप्त करता है। यज्ञ से मेद्य से वर्षा होती है।*

***'भूमिं पर्जन्या जिन्वन्ति, दिवं जिन्वन्त्यग्नयः'*[1]**

*(ऋग्वेद 1–164–51)*

*यजुर्वेद में उत्तम कृषि के लिए यज्ञ को आवश्यक बताया गया है। वेदों में जहाँ विश्व के लिए जीवन उपयोगी अन्य वस्तुओं का निर्देश किया गया है। वहीं वृक्ष, वनस्पति, औषधि, लता एवं वनों का भी सम्मानपूर्वक उल्लेख किया गया है। वैदिक ऋषियों ने पर्यावरण की दृष्टि से इनका महत्व समझते हुए इन्हें श्रद्धापूर्वक नमस्कार करते हुए कहा है–*

***'नमो वृक्षेभ्यः'*[2]** *(यजुर्वेद० 16–17)*

*इतना ही नहीं वृक्ष, वन एवं औषधियों का संरक्षण एवं संवर्धन करने वालों को भी 'वनानां पतये नमः' तथा*

***'औषधीनां पतये नमः कहकर नमस्कार किया गया है।*[3]**

*(यजुर्वेद० 16–18 एवं 19)*

*वैदिक मान्यतानुसार पर्यावरण की शुद्धि का सर्वोत्तम साधन यज्ञ है इसलिए यज्ञ को वैदिक संस्कृति का अभिन्न अंग माना गया है यदि यज्ञ का गूढ़–दार्शनिक अर्थ लें तो यह सृष्टि एवं मानव–जीवन ही यज्ञ है और परमात्मा इस सृष्टियाग का सर्वप्रथम होता है। अन्य वेदमन्त्रों एवं विशेष रूप से 'पुरूषसूक्त' में यज्ञ से ही सृष्टि की उत्पत्ति प्रतिपादित है। इसी वैदिक भावना की अनुपालना करते हुए भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है कि प्रजापति ने यज्ञ से ही सृष्टि परम्परा को बढ़ाया। भौतिक दृष्टि से यज्ञ वह अग्निहोत्र है जिसके अन्तर्गत घी एवं सामग्री की आहुतियां पवित्र वेदमन्त्रों का उच्चारण करके अग्नि में दी जाती है और अग्नि अपने में डाले गए उक्त द्रव्यों को अत्याधिक शक्तिशाली बनाकर वायु–जल–पृथ्वी एवं अन्तरिक्ष में पहुँचा देता है जिससे वातावरण शुद्ध, पवित्र, सुगन्धित, प्राणदायक एवं स्वास्थ्यप्रद हो जाता है। अतः वैदिक सिद्धान्तानुसार अग्निहोत्र ही पर्यावरण की समस्या का सर्वोत्तम एवं सरलतम समाधान है। अग्निहोत्र का आधारस्तम्भ अग्नि है। यही अग्नि सूर्य के रूप में प्रकाश एवं उष्णता प्रदान करता है और अपनी तीक्ष्ण किरणों से समस्त दूषित पदार्थों व मल–मूत्रादि को सूखाकर पर्यावरण को स्वच्छ, रोगाणुरहित, स्वास्थ्यप्रद एवं जीवन को उपयोगी बनाता है।*

*पर्यावरण की दृष्टि से वृक्षों के महत्व की यह वैदिक मान्यता जैसे बाद के लौकिक संस्कृत साहित्य में भी दृष्टिगत होती है। संस्कृत नाटकों में प्रकृति के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध दृष्टिगत होता है। अन्तः प्रकृति एवं बाह्य प्रकृति का इन नाटकों में सुन्दर समन्वय किया गया है। अन्तः प्रकृति की सूक्ष्म एवं सुकुमार भावनाओं के चित्रण के लिए बाह्य प्रकृति चित्रफलक का कार्य करती है। प्रकृति का मानवीकरण भी संस्कृत रुपकों की अपनी विशेषता रही है। इनमें मानव का प्रकृति के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध दृष्टि गोचर होता है। कालिदास के ''अभिज्ञानशाकुन्तलम्'' में शकुन्तला की विदाई के समय प्राकृतिक उपादानों की स्थिति का सजीव कारुणिक वर्णन हृदय को सहज भावाभिभूत करने वाला है –*

(MIJ) 2020, Vol. No. 6, Jan-Dec e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103

***'उद्‌गलित दर्भकवला मृग्यः, परित्यक्तनर्तना मयूराः।***

***अपसृत पाण्डुपत्रा मुन्चन्त्यश्रूणीव लताः।'[4]***

*'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में वनस्पतियों के प्रति जिस स्नेहिल भावना की अभिव्यक्ति हुई है वह उस समय के पर्यावरण चेतना का सर्वोष्कृष्ट स्वरूप प्रस्तुत करता है। वृक्षों को पुत्र रूप से प्रतिष्ठा तथा इससे भी बढ़कर उनके प्रति कृतज्ञता एवं श्रद्धा का भाव प्रायः प्रत्येक पुराण में मिलता है। सर्वप्रथम महाभारत में वृक्षों को धर्मपुत्र मानकर इनके संरक्षण एवं संवर्धन को अत्यन्त श्रेयस्कर बताया गया है। महाभारत के मोक्ष धर्म पर्व में तो वृक्षों को सजीव प्राणी के रूप में वर्णित किया गया है।*

*भारतीय संस्कृति में पर्यावरण व प्राकृतिक संसाधनों के बचाव को अत्यंत महत्व प्रदान किया गया है। यहाँ मानव जीवन हमेशा प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्र, नदी, वृक्ष एवं पशु–पक्षी आदि को मैतृत्व में देखा गया है। पर्यावरण संरक्षण का अर्थ प्रकृति द्वारा प्रद्त्त वस्तुओं का उपयोग बंद करना बिल्कुल नहीं है बल्कि उनका संतुलित उपयोग करना है ताकि ये प्राकृतिक संसाधन हमारी भावी पीढ़ियों के लिए भी बचाए जा सकें।*

*रामायण, महाभारत, गीता, वायु–पुराण, स्कन्दपुराण, भविश्यपुराण, वराहपुराण, भागवतपुराण, उपनिशद, बाईबिल श्री गुरू ग्रन्थ व कुरान जैसे अग्रगण्य धार्मिक ग्रंथों में पेड़–पौधे व जीव जंतुओं पर दया करने की बात पर बल दिया है यदि ध्यान से इन षास्त्रों की बातों को पढ़ा जाए तो मानव से इनका संबंध अन्तरंग है और इनके नश्ट करने की बात को तो सोचा भी नहीं जा सकता। मानसिक षांति, षारीरिक सुख के सभी साधन हमें प्रकृति से प्राप्त होते हैं। प्रकृति हमें खाद्य व अखाद्य संसाधन प्रदान करती है–जैसे गेहूँ, जौं, तेल, चना, केसर, हल्दी, षहद, इलायची, लौंग इन सभी को सुरक्षित व बचाने हेतु इन्हें किसी दिन, त्यौहार, देवी देवताओं रखने की पूजा अर्चना से जोड़ा गया है। वायु, जल, पीपल, तुलसी, सूर्य को अराध्य मानकर इनकी पूजा की जाती है, क्योंकि कोई भी अपने ईश को हानि नहीं पहुँचाता और ये सभी जीवन दायत्व सुरक्षित रखे जा सकते हैं।*

*भारतीय दर्शन यह मानता है कि मानव षरीर की सरंचना पर्यावरण के घटकों से हुई है जैसे पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश आदि। इतिहास भी इस तथ्य का स्वीकारता है क्योंकि सभी सभ्यताएं नदियों के किनारे ही फली–फूली हैं। जल, वायु के बिना हमारा जीवन संभव नहीं है। हमारे षरीर का 70 फीसदी भाग जल से निर्मित है। इनकी महत्वता इतनी ही नहीं बल्कि अगर हम किसी रोग से ग्रसित हो जाते हैं तो उपचार भी प्राकृति द्वारा प्रदत्त जड़ी–बूटियों व औशधियों से किया जाता है। पीपल अपने जीवन काल से लाखों लोगों को जीवन प्रदान करता है। इतिहास इस बात का साक्षी है मनुश्य ने जब–जब प्रकृति के नियमें को तोड़ना है व असंतुलन पैदा करने का प्रयास करते है तो समस्या उत्पन्न हो जाती है। प्रकृति के लिए कोई राजा, प्रजा, नेता, जाति, धर्म या समुदाय श्रेश्ठ नहीं है, सभी समान हैं व सभी को समान रूप से अपने संसाधनों से लाभांवित करती रहती है। भारतीय संस्कृति में ग्रहों के दोशों के निवारण के लिए नदियों व जल स्त्रोतों में पीपल वृक्ष नीचे के सिक्के व कच्चा कोयला प्रवाहित किया जाता रहा है। जिसका वैज्ञानिक कारण यह है कि जल में पनपने वाले हानिकारक सूक्ष्म जीव के हानिकारक गुण नश्ट हो जाते हैं। इस प्रकार हम रोगों से संक्रमित होने से बच जाते हैं। गाय का गोबर, मूत्र हमारे लिए लाभकारी हैं। इसलिए गाय को कामधेनु की संज्ञा दी गई है। ये सभी भारतीय संस्कृति में इस तरह समाहित है। जिस प्रकार जीवों में जीवन द्रव्य।*

*भारत के सभी महान कवियों व लेखकों जैसे कालिदास, रसखान, तुलसीदास, कबीरदास, सूरदास आदि ने अपनी रचनाओं में प्रकृति के महत्व का गुणगान किया है। अपने अराध्यों के मुख को चंद्र, चरणों को कमल, होठों को गुलाब, गुस्से को सूर्यप्रताप की उपमाओं से विभीशित किया है व ख्याति प्राप्त की है। यह सिद्ध करता है कि भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण को अहम् स्थान प्राप्त है।*

*वैदिक काल में भी ऋशि, मुनियों का अराधना का सर्वश्रेश्ठ स्थान वन, पर्वत, नदियों के तट अर्थात् प्रकृति की गोद में षांति प्राप्त होती है। जिससे की हम अपना सर्वश्रेश्ठ ध्यान लगा सकते हैं और अपने अराध्य को प्रसन्न कर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। इसी प्रकार आज के युग में भी अगर हम प्रकृति को हानि पहुंचाएगे तो प्रकृति हमें पाप रूपी नकारात्मक प्रभाव जैसे बाढ़, सूखा, दावानल, भूकंप आदि से प्रभावित करेगी व हमे नश्ट भी कर सकती है।*

*वैदिक मन्त्रों से ऐसा प्रतीत होता है कि वैदिक ऋषियों ने पर्यावरण की समस्या के समाधान हेतु गम्भीर चिन्तन किया था और मानव एवं विश्व के कल्याण के लिए पर्यावरण को जीवनोपयोगी बनाने के साधनाभूत यज्ञों का एक वैज्ञानिक विधि के रूप में आविष्कार किया था। यज्ञ की इसी महत्ता के कारण मन्त्र में उसे '**अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः**'[5] कहकर विश्व के केन्द्र के रूप में महिमा मण्डित किया गया है। आज यद्यपि पर्यावरण की स्वच्छता के वैज्ञानिक उपाय भी किए जा रहे हैं, किन्तु एक तो वे उपाय अत्यन्त व्यय साध्य है और दूसरे वे सर्वजन सुलभ भी नहीं है। अतः पर्यावरण की समस्या के समाधान के लिए यज्ञ ही सर्वोत्तम, सरलतम एवं सर्वजन–सुलभ–साधन है। इसके अतिरिक्त याजक वेदमन्त्रों में यज्ञ करते समय अन्तरात्मा से विश्व के कल्याण एवं विश्व शान्ति की जो कामना करता है, वेदमन्त्रों का स्वर सहित मधुर गायन ध्वनि प्रदूषण को दूर करके वातावरण को सौम्य, शान्त एवं आहलादक बनाता है।*

*पर्यावरण की शुद्धि के लिए अग्नि में गोघृत, पीपल, गूगल आदि औषधियों की आहुति का विधान वेदमन्त्रों में मिलता है। वैदिक संहिताओं में पर्यावरण की शुद्धि के वन वृक्ष एवं वनस्पतियों तथा यज्ञ को पर्यावरण के लिए सर्वाधिक प्रभावशाली व सर्वोत्तम साधन के रूप में स्वीकार किया गया है।[6] हम वैदिक साहित्य में वर्णित वन सम्पदा एवं यज्ञ आदि के अनुरूप अपनी दैनिक क्रियाओं का सम्पादन करें तो 'वसुधैव कुटुम्बकम्'[7] का भाव विश्व में सर्वत्र व्याप्त होगा।*

***उपसंहार**–हमें अपनी संस्कृति को स्मरण रख अपने कल्याण के बारे में सोचना चाहिए और प्राकृतिक किसी घटना को हानि पहुँचाने तक का विचार अपने मस्तिश्क में नहीं लाना चाहिए क्योंकि यह तो अपने हाथों से विश लेने के समान है व अपने जीवन को नश्ट करने के समान है। आज आधुनिकता के युग में मानव का सामाजिक एवं चारित्रिक ह्रास हो रहा है जो गम्भीर चिन्ता का विषय है। आज के पर्यावरणवेत्ता केवल भौतिक दृष्टि से जल एवं वायु, ध्वनि, भूमि के प्रदूषण को दूर करने के उपाय खोजने तक की सीमित रह गए हैं जबकि इनके अतिरिक्त आज विश्व में बढ़ता हुआ वाचिक, मानसिक एवं चारित्रिक प्रदूषण और भी अधिक मानसिक अशान्ति का कारण बना हुआ है जिसके रहते हम एक अनन्त परिवेश की कल्पना नहीं कर सकते। वैदिक मन्त्र–द्रष्टाओं का ध्यान इस भयावह समस्या के इस बिन्दु पर भी गया था और उन्होंनें–*

***''वाचं वदत भद्रया वाचं ते शुन्धामि चरित्रांस्ते शुन्धामि तन्नो मनः शिव संकल्पमस्तु''** इत्यादि[8]*

(MIJ) 2020, Vol. No. 6, Jan-Dec e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103

*वेदमंत्रों में व्यक्ति के मानसिक, वाणी एवं चारित्रिक शुद्धि के लिए भी दिव्य प्रेरणा प्रदान की थी। इस प्रकार सार्वभौम मानव संस्कृति के आदि स्त्रोत वेदों में भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से पर्यावरण की शुद्धि के ऐसे साधनों का विधान किया गया है जिन्हें अपनाकर संसार में एक सुखी एवं आनन्दमय वातावरण बनाया जा सकता है। हम प्राचीन ऋषियों के मार्ग का अनुसरण करके ही इस स्नेहिल भावना को पुष्ट कर सकते हैं। तभी यह उद्घोषणा सार्थक सिद्ध होगी–*

***सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।***

***सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।***

***सन्दर्भ ग्रन्थ***

*1. ऋग्वेद संहिता, सातवंलकर, स्वाध्याय मण्डल, पारडी।*
*2. यजुर्वेद संहिता, सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, पारडी।*
*3. यजुर्वेद संहिता, सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, पारडी।*
*4. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, चतुर्थ अंक।*
*5. ऋग्वेदीय भाष्य भूमिका।*
*6. वैदिक साहित्य और संस्कृति।*
*7. वैदिक साहित्य और संस्कृति।*
*8. यजुर्वेद संहिता, सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, पारडी।*

# REFERENCES

1. Rigveda Samhita, Satvalekar, Swadhyay Mandal, Pardi
2. Yajurveda Samhita, Satvalekar, Swadhyay Mandal, Pardi
3. Samhita, Satvalekar, Swadhyay Mandal, Pardi
4. Abhigyanshakuntalam, No. 4
5. Rigvedic commentary role
6. Vaidik Sahitya Aur Sanskriti
7. Vaidik Sahitya Aur Sanskriti
8. Yajurveda Samhita, Satvalekar, Swadhyay Mandal, Pardi